



परीक्षा-गुरु प्रकरण-१३ बिगाड़का मूल-बिवाद

हिन्दी
A D D A

परीक्षा-गुरु प्रकरण-१३

बिगाड़का मूल- बि वाद

को पै बिन अपराध । रीझै बिन कारन जुनर ॥

ता को जी ल असाध । शरदकालके मेघ जों ॥

बिदुरप्रजागरे.

लाला मदनमोहन हवा खाकर आए उस्समय लाला हरकिशोर साठन की गठरी लाकर कमरे में बैठे थे.

"कल तुमने लाला हरदयाल साहब के सामने बड़ी ढिठाई की परन्तु मैं पुरानी बातोंका बिचार करके उस्समय कुछ नहीं बोला" लाला मदनमोहन ने कहा.

"आपने बड़ी दया की पर अब मुझको आपसे एकान्त में कुछ कहना है, अवकाश हो तो सुन लीजिये" लाला हरकिशोर बोले.

"यहां तो एकांत ही है तुमको जो कुछ कहना हो निस्सन्देह कहो" लाला मदनमोहन ने जवाब दिया.

"मुझको इतना ही कहना है कि मैंने अब तक अपनी समझ मुजिब आपको अप्रसन्न करने की कोई बात नहीं की परन्तु मेरी सब बातें आपको बुरी लगती हैं तो मैं भी ज्यादा आवा जाई रखने में प्रसन्न नहीं हूँ. किसी ने सच कहा है "जब तो हम गुल थे मियां लगते हजारों के गले ।। अब तो हम खार हुए सब से किनारे ही भले ।।" संसार में प्रीति स्वार्थ परता का दूसरा नाम है. समय निकले पीछे दूसरे से मेल रखने की किसी को क्या गरज़ पड़ी है ? अच्छा ! महरबानी करके मेरे माल की कीमत मुझको दिलवा दें" हरकिशोर ने रूखाई से कहा.

"क्या तुम कीमत का तकाजा करके लाला साहब को दबाया चाहते हो ?" मुन्शी चुन्नीलाल बोले.

"हरगिज़ नहीं मेरी क्या मजाल ?" हरकिशोर कहने लगे - "सब जानते हैं कि मेरे पास गांठ की पूंजी नहीं है, मैं जहां तहां से माल लाकर साहब के हुकम की तामील कर देता था परन्तु अबकी बार रुपये मिलने में देर हुई. कई एकरार झूठे हो गए इसलिये लोगों का विश्वास जाता रहा अब आज कल मैं उनके माल की कीमत उनके पास न पहुँचेगी तो वे मेरे ऊपर नालिश कर देंगे और मेरी इज्जत धूल में मिल जायगी."

<https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-xiii-bigadaka-mool-bis-va/>

"तुम कुछ दिन धैर्य धरो तुम्हारे रुपये का भुगतान हम बहुत जल्दी कर देंगे" लाला मदनमोहन नें कहा.

जब मेरे ऊपर नालिश हो गई और मेरी साख जाती रही तो फिर रुपये मिलनें सै मेरा क्या काम निकला ? "देखो अवसर को भलो जासों सुधरे काम । खेती सूखे बरसवो धन कौ निपट निकाम ।।" मैं जानाता हूँ कि आप को अपने कारण किसी गरीब की इज्जत में बट्टा लगाना हरगिज मंजूर न होगा" लाला हरकिशोर नें कुछ नरम पड़कर कहा.

"तुम्हारा रुपया कहां जाता है ? तुम जरा धैर्य रक्खो. तुमनें यहां सै बहुत कुछ फायदा उठाया है, फिर अबकी बार रुपये मिलनें मैं दो, चार दिनकी देर हो गई तो क्या अनर्थ हो गया ? तुमको ऐसा कड़ा तकाजा करनें मैं लाज नहीं आती ? क्या संसार सै मेल मुलाहजा बिल्कुल उठगया ?" मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

"मैंभी इसी चारा बिचार मैं हूँ" हरकिशोर नें जवाब दिया "मैं तो माल देकर मोल चाहता हूँ. ज़रूरत के सबब सै तकाजा करता हूँ पर न जानें और लोगों को क्या होगया जो बेसबब मेरे पीछे पड़ रहे हैं ? मुझसै उन्को बहुत कुछ लाभ हुआ होगा परन्तु इस्समय वे सब 'तोता चश्म' होगए. उन्हीं के कारण मुझको यह तकाजा करना पड़ता है. जो आजकल मैं मेरे लेनदारोंका रुपया न चुका, तो वे निस्सन्देह मुझपर नालिश कर देंगे और मैं गरीब, अमीरोंकी तरह दबाव डालकर उन्को किसी तरह न रोक सकूंगा ?

"तुम्हारी ठगविद्या हम अच्छी तरह जान्ते हैं, तुम्हारी जिद सै इस्समय तुमको फूटी कौड़ी न मिलेगी, तुम्हारे मन मैं आवे सो करो." मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

<https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-xiii-biggadaka-mool-bis-va/>

"जनाब जबान सम्हाल कर बोलिये. माल देकर कीमत मांगना ठगविद्या है ?" गिरधर सच कहता है "साईं नदी समुद्रसों मिली बड़प्पन जानी ॥ जात नास भयो आपनो मान महत की हानि ॥ मान महत की हानि कहो अब कैसी कीजै ॥ जलखारी हयै गयो ताहि कहो कैसें पीजै ॥ कह गिरधर कबिराय कच्छ मच्छ न सकुचाई ॥ बड़ो फ़जीहत चार भयो नदियन को साईं ॥"

"बस अब तुम यहां सै चल दो. ऐसे बाजारू आदमियोंका यहां कुछ काम नहीं है" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"मैंने किसी अमीर के लड़केको बहका कर बदचलनी सिखाई ? या किसी अमीर के लड़केको भोगबिलास में डाल कर उसकी दौलत ठग ली जो तुम मुझे बाजारू आदमी बताते हो ?"

"तुम कपड़ा बेचनें आएहो या झगड़ा करनें आएहो ?" मुन्शी चुन्नीलाल पूछनें लगे.

"न मैं कपड़ा बेचनें आया न मैं झगड़ा करनें आया. मैंतो अपना रुपया वसूल करनें आया हूँ. मेरा रुपया मेरी झोली में डालिये फिर मैं यहां क्षण भर न ठैरूंगा"

"नहीं जी, तुमको जबरदस्ती यहां ठैरनें का कुछ अखत्यार नहीं है, रुपये का दावा हो तो जाकर अदालत में नालिश करो." मास्टर शिंभूदयाल बोले.

"तुम लोग अपनी गलीके शेरहो- यहां चाहे जो कहलो परन्तु अदालत में तुम्हारी गीदड़ भपकी नहीं चल सकती. तुम नहीं जानते कि ज्यादा: घिस्नें पर चंदन सै भी आग निकलती है. अच्छे आदमी को खातर शिष्टाचारी सै चाहे जितना दबालो परन्तु अभिमान और धमको सै वह कभी नहीं दबता"

<https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-xiii-biggadaka-mool-bis-va/>

"तो क्या तुम हमको इन बातों से दबा लोगे ?" लाला मदनमोहन ने त्योरी चढ़ाकर कहा.

"नहीं साहब, मेरा क्या मकदूर है ? मैं गरीब, आप अमीर. मुझको दिनभर रोज़गार धंधा करना पड़ता है, आपका सबदिन हँसी दिल्लगी की बातों में जाता है. मैं दिनभर पैदल भटकता हूँ, आप सवारी बिना एक कदम नहीं चलते. मेरे रहने की एक झोंपड़ी, आप के बड़े बड़े महल. मुल्क में अकालहो, गरीब बिचारे भूखों मरतेहों, आप के यहां दिन रात ये ही हाहा, हीहो, रहैगी. सच है आप पर उन्का क्या हक़ है ? उन्सै आपका क्या सम्बन्ध है ? परमेश्वर ने आपको मनमानी मोज करने के लिये दौलत देदी फिर औरों के दुःख दर्द में पड़ने की आपको क्या ज़रूरत रही ? आपके लिये नीति अनीति की कोई रोक नहीं है आप-"

"क्यों जी ! तुम अपनी बकवाद नहीं छोड़ते-अच्छा जमादार इन्को हाथ पकड़ कर यहां से बाहर निकालदो और इन्की गठरी उठाकर गली में फेंकदो" मुन्शी चुन्नीलाल ने हुकम दिया.

"मुझको उठाने की क्या जरूरत है ? मैं आप जाता हूँ परन्तु तुमने बेसबब मेरी इज्जत ली है इस्का परिणाम थोड़े दिन में देखोगे. जिस तरह राजा द्रुपद ने बचपन में द्रोणाचार्य से मित्रता करके राज पाने पर उन्का अनादर किया तब द्रोणाचार्य ने कौरव पांडवों को चढ़ा ले जाकर उसकी मुश्कें बंधवा ली थीं और चाणक्यने अपने अपमान होने पर नन्दवंश का नाश करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर दिखाई थी. पृथ्वीराज ने संयोगता के बसवर्ती होकर चन्द और हाहुली राय को लोंडियों के हाथ पिटवाया तब हाहुली राय ने उसका बदला पृथ्वीराज से लिया था, इसी तरह परमेश्वर ने चाहा तो मैं

<https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-xiii-bigadaka-mool-bis-va/>

भी इस्का बदला आपसै लेकर रहूँगा" यह कहकर हरकिशोर नें तत्काल अपनी गठरी उठाली और गुस्सै में मूछोंपर ताव देता चला गया.

"ये बदला लेंगे ! ऐसे बदला लेनेवाले सैकड़ों झकमारते फिरते हैं" हरकिशोर के जाते ही मुन्शी चुन्नीलाल नें मदनमोहन को दिलासा देने के लिये कहा.

"जो यों किसी के बैर भाव सै किसी का नुकसान होजाया करै तो बस संसार के काम ही बन्द होजायं" मास्टर शिंभूदयाल बोले.

"सूर्य चंद्रमा की तरफ धूल फेंकने वाले अपनेही सिर पर धूल डालते हैं" पंडित पुरुषोत्तमदास नें कहा. पर इनबातों सै लाला मदनमोहन को संतोष न हुआ.

"में हरकिशोर को ऐसा नहीं जान्ता था, वह तो आज आपे सै बाहर होगए. अच्छा ! अब वह नालिश कर दें तो उन्की जवाब दिही किस तरह करनी चाहिये ? में चाहता हूँ कि चाहे जितना रुपया खर्च होजाय परन्तु हरकिशोर के पल्लै फूटी कौड़ी न पड़े" लाला मदनमोहन नें अपने स्वभावानुसार कहा.

मदनमोहन के निकटबर्ती जान्ते थे कि मदनमोहन जैसे हठीले हैं वैसे ही कमहिम्मत हैं, जिस्समय उन्को किसी तरह का घबराहट हो हरेक आदमी दिलजमई की झूटी सच्ची बातें बना कर उन्को अपने काबू पर चढ़ा सकता है और मन चाहा फायदा उठासक्ता है इस लिये अब चुन्नीलाल नें वह चाल डाली.

"यह मुकद्दमा क्या चीज है ! ऐसे सैकड़ों मुकद्दमें आपके पुन्य प्रताप सै चुटकियों में उड़ा सक्ता हूँ परन्तु इस्समय मेरे चित्त को जरा उद्वेग होरहा है इसी सै अकल काम नहीं देती" मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

<https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-xiii-biggadaka-mool-bis-va/>

"क्यों तुम्हारे चित्त के उद्वेग का क्या कारण है ? क्या हरकिशोर की धमकी सँ डर गए ? ऐसा हो तो विश्वास रक्खो कि मेरी सब दौलत खर्च होजायगी तो भी तुम्हारे ऊपर आंच न आनेँ दूंगा" लाला मदनमोहन नेँ कहा.

"नहीं, महाराज ! ऐसी बातोंसँ मैं कब डरता हूँ ? और आपके लिये जो तकलीफ मुझको उठानी पड़े उसमें तो और मेरी इज्जत है. आपके उपकारोंका बदला मैं किस तरह नहीं दे सकता, परन्तु लड़कीके ब्याहके दिन बहुत पास आ गये, तयारी अबतक कुछ नहीं हुई, ब्याह आपकी नामवरीके मूजिब करना पड़ेगा, इससँ इन दिनों मेरी अकल कुछ गुमसी हो रही है" मुन्शी चुन्नीलालनेँ कहा.

"तुम धैर्य रक्खो तुम्हारी लड़कीके ब्याहका सब खर्च हम देंगे" लाला मदनमोहन नेँ एकदम हामी भर ली.

"ऐसी सहायता तो इस सरकार सँ सब को मिलती ही है परन्तु मेरी जीविका का वृत्तान्त भी आप को अच्छी तरह मालूम है और घर का गृहस्थका खर्च भी आपसँ छिपा नहीं है, भाई खाली बैठे हैं जब आपके यहांसँ कुछ सहायता होगी तो ब्याहका काम छिड़ैगा कपड़े लते वगैरे की तैयारी में महीनों लगते हैं" मुन्शी चुन्नीलालनेँ कहा.

"लो; ये दो सौ रुपेके नोट लेकर इससमय तो काम चलता करो, और बातोंके लिये बंदोबस्त पीछेसँ कर दिया जायगा" लाला मादनमोहननेँ नोट देकर कहा.

"जी नहीं हुजूर ! ऐसी क्या जल्दी थी" मुन्शी चुन्नीलाल नोट जेब में रखकर बोले,

"यह भी अच्छी बिद्या है" पंडितजीनेँ भरमा भरमी सुनाई.

<https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-xiii-biggadaka-mool-bis-va/>

"में जान्ता हूँ कि प्रथम तो हरकिशोर नालिश ही नहीं करेंगे और की भी तो दमभर में खारिज कर दी जायगी" मुन्शी चुन्नीलालनें कहा.

निदान लाला मदनमोहन बहुत देरतक इस प्रकारकी बातों से अपनी छातीका बोझ हल्का करके भोजन करनें गए और गुपचुप बैजनाथके बुलानेके लिये एक आदमी भेज दिया.



परीक्षा-गुरु – Pariksha Guru

परीक्षा गुरु हिन्दी का प्रथम उपन्यास था जिसकी रचना भारतेन्दु युग के प्रसिद्ध नाटककार लाला श्रीनिवास दास ने 25 नवम्बर, 1882 को की थी।

परीक्षा गुरु पहला आधुनिक हिंदी उपन्यास था। इसने संपन्न परिवारों के युवकों को बुरी संगति के खतरनाक प्रभाव और इसके परिणामस्वरूप ढीली नैतिकता के प्रति आगाह किया। परीक्षा गुरु नए उभरते मध्यम वर्ग की आंतरिक और बाहरी दुनिया को दर्शाता है। पात्र अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए औपनिवेशिक समाज के अनुकूल होने की कठिनाई में फंस जाते हैं। हालांकि यह जाहिर तौर पर विशुद्ध रूप से 'पढ़ने के आनंद' के लिए लिखा गया था। औपनिवेशिक आधुनिकता की दुनिया भयावह और अप्रतिरोध्य दोनों लगती है।

उपन्यास पाठक को जीने का 'सही तरीका' सिखाने की कोशिश करता है और सभी समझदार पुरुषों से सांसारिक बुद्धिमान और व्यावहारिक होने, अपनी परंपरा और संस्कृति के मूल्यों में निहित रहने और सम्मान और सम्मान के साथ जीने की उम्मीद करता है। पात्र अपने कार्यों के माध्यम से दो अलग-अलग दुनियाओं को जोड़ने का प्रयास करते हैं; वे नई कृषि प्रौद्योगिकी को अपनाते हैं, व्यापारिक प्रथाओं का आधुनिकीकरण करते हैं, भारतीय भाषाओं के उपयोग को बदलते हैं जिससे वे पश्चिमी विज्ञान और भारतीय ज्ञान दोनों को अपनाने में सक्षम हो जाते हैं। युवाओं से समाचार पत्र पढ़ने की स्वस्थ आदत विकसित करने का आग्रह किया जाता है। यह सब पारंपरिक मूल्यों का त्याग किए बिना हासिल किया जाना चाहिए।

इस उपन्यास उपन्यास 41 छोटे-छोटे प्रकरणों में विभक्त है। कथा तेजी से आगे बढ़ती है और अंत तक रोचकता बनी रहती है। पूरा उपन्यास नीतिपरक और उपदेशात्मक है। उसमें जगह-जगह इंग्लैंड और यूनान के इतिहास से दृष्टांत दिए गए हैं। ये दृष्टांत मुख्यतः ब्रजकिशोर के कथनों में आते हैं। इनसे उपन्यास के ये स्थल आजकल के पाठकों को बोझिल लगते हैं। उपन्यास में बीच-बीच में संस्कृत, हिंदी, फारसी के ग्रंथों के ढेर सारे उद्धरण भी ब्रज भाषा

<https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-xiii-biggadaka-mool-bis-va/>

में काव्यानुवाद के रूप में दिए गए हैं। हर प्रकरण के प्रारंभ में भी ऐसा एक उद्धरण है। उन दिनों काव्य और गद्य की भाषा अलग-अलग थी। काव्य के लिए ब्रज भाषा का प्रयोग होता था और गद्य के लिए खड़ी बोली का। लेखक ने इसी परिपाटी का अनुसरण करते हुए उपन्यास के काव्यांशों के लिए ब्रज भाषा चुना है।

परीक्षा-गुरु - Pariksha Guru in Hindi

1. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१ सौदागरकी दुकान
2. परीक्षा-गुरु प्रकरण- २ अकालमें अधिकमास
3. परीक्षा-गुरु प्रकरण- ३ संगतिका फल
4. परीक्षा-गुरु प्रकरण-४ मित्रमिलाप
5. परीक्षा-गुरु प्रकरण-५ विषयासक्त
6. परीक्षा-गुरु प्रकरण-६ भले बुरे की पहचान
7. परीक्षा-गुरु प्रकरण – ७ सावधानी (होशयारी)
8. परीक्षा-गुरु प्रकरण-८ सबमें हां
9. परीक्षा-गुरु प्रकरण-९ सभासद
10. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१० प्रबन्ध (इन्तजाम)
11. परीक्षा-गुरु प्रकरण-११ सज्जनता
12. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१२ सुख दुःख
13. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१३ बिगाडका मूल- बि वाद

14. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१४ पत्रव्यवहा
15. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१५ प्रिय अथवा पिय ?
- 16.
17. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१६ सुरा (शराब)
18. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१७ स्वतन्त्रता और स्वेच्छाचार.
19. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१८ क्षमा
20. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१९ स्वतन्त्रता
21. परीक्षा-गुरु प्रकरण – २० कृतज्ञता
22. परीक्षा-गुरु प्रकरण-२१ पति ब्रता
23. परीक्षा-गुरु प्रकरण-२२ संशय
24. परीक्षा-गुरु प्रकरण-२३ प्रामाणिकता
25. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२४ (हाथसै पै दा करने वाले) (और पोतडों के अमीर)
26. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२५ साहसी पुरुष
27. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२६ दिवाला

<https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-xiii-bigadaka-mool-bis-va/>

28. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२७ लोक चर्चा (अफ़वाह).
29. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२८ फूट का काला मुंह
30. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२९ बात चीत.
31. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३० नै राश्य (नाउम्मेदी).
32. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३१ चालाक की चूक
33. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३२ अदालत
34. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३३ मित्रपरीक्षा
35. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३४ हीनप्रभा (बदरोबी)
36. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३५ स्तुति निन्दा का भेद
37. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३६ धोके की टट्टी
38. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३७ बिपतमें धैर्य
39. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३८ सच्ची प्रीति
40. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३९ प्रेत भय
41. परीक्षा-गुरु प्रकरण ४० सुधारने की रीति
42. परीक्षा-गुरु प्रकरण ४१ सुखकी परमावधि